P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-3, February-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के संबंध में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन

दिलीप कुमार झा
प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
प्रज्ञा कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
बहादुरगढ़, हरियाणा

सारांश

विद्यालय एक ऐसी संस्था है जिसे समाज द्वारा औपचारिक रूप से बच्चों को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व दिया गया है विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण बालक के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण वह परिवृत्त है जो छात्र को चारों ओर से घेरे हुए हैं, तथा उनके जीवन व क्रियाओं पर प्रभाव डालता है। इस परिस्थिति में छात्र से संबंधित बाहर के समस्त तथ्य, वस्तुए, स्थितियाँ तथा दिशाएँ सम्मिलित होती हैं।

कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन स्तर एक छात्र का दूसरे से भिन्न होता है। प्रत्येक छात्र अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार ही कक्षा में प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन करता है। छात्र का कक्षा में समायोजित होना उसके विकास के लिए आवश्यक है। यह समायोजन परिवार, समाज, स्वास्थ्य एवं विद्यालय सभी से होना चाहिए। यदि बालक अपने परिवार में पूर्ण रूप से समायोजित है तो उसका कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण सकारात्मक होगा तथा उसकी शैक्षिक उपलब्धि धनात्मक होगी। यदि बालक अपने परिवार में समायोजित नहीं हो पाता है तो उसका कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण नकारात्मक होगा जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होगी। इसलिए छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : शैक्षिक, उपलब्धि, समयोजन, कक्षापर्यावरण, प्रत्यक्षीकरण, माध्यमिक विद्यालय।

प्रस्तावना

प्रत्येक कक्षा की अपनी विशेषताएं होती हैं। एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आने से उसके गुणों का अनुभव करता है। इसी प्रकार कक्षा में विद्यार्थी भी कक्षा के वातावरण से प्रभावित होकर कक्षा के गुण व अवगुण का अनुभव करते हैं।

कक्षा पर्यावरण ही विद्यार्थी एवं शिक्षक के आपसी संपर्क का माध्यम है। अधिक ज्ञानी एवं अनुभवी होने के नाते शिक्षक विषय संबंधी ज्ञान एवं सूचनाओं को विद्यार्थी को शिक्षण के रूप में प्रदान करते हैं। दूसरी ओर विद्यार्थी शिक्षक द्वारा प्रदत्त ज्ञान को ग्रहण कर अपने व्यक्तित्व में वांछनीय दिशा में परिवर्तन कर अपने व्यक्तित्व का परिमार्जन करता है। व्यवहार परिमार्जन की प्रक्रिया को ही मनोविज्ञान में अधिगम या सीखना कहते हैं। अतः कक्षा पर्यावरण में शिक्षण प्रक्रिया में सीखना तथा सिखाना दोनों प्रक्रियाएं एक साथ चलती है। कक्षा में शिक्षण होता है और विद्यार्थी सीखता है। इसे ही अधिगम कहते हैं। यदि कक्षा पर्यावरण सकारात्मक होता है तो अधिगम प्रभावपूर्ण होता है। जिससे इसका असर शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। यदि कक्षा का वातावरण नकारात्मक है तो छात्र कक्षा में शारीरिक रूप से तो उपस्थित रहते हैं परंतु मानसिक रूप से बाहर होते हैं। अतः उनको आकर्षित करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक छात्रों की रूचि के अनुसार शिक्षण को रुचिकर बनाएं। इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछकर, श्यामपट्ट पर मुख्य बिंदुओं को लिखकर तथा विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान से संबंधित उदाहरणों के माध्यमों से विद्यार्थियों को अधिगम के प्रति सक्रिय बनाया जा सकता है।

कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण उन समस्त आंतरिक दशा एवं प्रभाव का योग है जो प्राणी के जीवन एवं विकास पर प्रभाव डालते हैं। वर्तमान समय में छात्र के प्रत्यक्षीकरण के लिए कक्षा के वातावरण का बहुत अधिक महत्व है।

शिक्षक का दायित्व है कि वह कक्षा में आत्मीय खुला और तनाव मुक्त वातावरण का निर्माण करें, ताकि छात्र निडर और आश्वस्त होकर कक्षा से संबंधित समस्याओं का समाधान कर सके। इस प्रकार कक्षा में इस तरह की परिस्थितियों उत्पन्न कर छात्रों की अधिगम–अध्यापन में भागीदारी बढ़ाई जा सकती है। शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ सहज, स्नेह और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार कर उन्हें खुलकर विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि अध्यापन के साथ साथ छात्रों की प्रगति व शैक्षिक उपलब्धि को लगातार बढ़ाया जा सके। विद्यालय के प्रशासन द्वारा कक्षा के वातावरण में सुधार लाने के लिए परिश्रम की आवश्यकता होती है।

छात्र जीवन में हर पल निर्देशन की आवश्यकता होती है। जिसमें अभिभावक तथा शिक्षक की भूमिका सबसे अहम होती है। ऐसी अवस्था में वह छात्र के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का ध्यान रखते हुए कक्षा में प्रत्यक्षीकरण की अपेक्षाएं करते हैं। छात्र कक्षा में रुचि के बिना बैठना भार समझते हैं। यही कारण है कि कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन के अभाव में प्रत्यक्षीकरण का स्तर गिरता जा रहा है जिससे शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित हो रही है। अर्थात ऐसी परिस्थितियों में समायोजन न होने पर छात्रों के पारिवारिक, सामाजिक, स्वास्थ्य और विद्यालय संबंधी समायोजन आदि पर प्रभाव देखने को मिलता है। जिसके कारण छात्रों में मानसिक तनाव उत्पन्न हो रहा है।

पारिभाषिक शब्दावली

कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण

कक्षा के मध्य छात्र तथा अध्यापक के बीच जो सामाजिक अंत क्रिया होती है और इसके परिणाम स्वरूप जो वातावरण उत्पन्न होता है उसे कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण कहते हैं।

समायोजन

अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार परिस्थितियों से अनुकूलन करना समायोजन कहलाता है।

शैक्षिक उपलब्धि

9वीं कक्षा के वार्षिक परीक्षा के संपूर्ण प्राप्तांक से है।

माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 9वीं में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं से है।

शोध विषय की आवश्यकता

कक्षा का वातावरण ही विद्यार्थी एवं शिक्षक के आपसी संपर्क का माध्यम है। कक्षा में शिक्षक ही विषय संबंधी ज्ञान एवं सूचनाओं को विद्यार्थी को शिक्षण के रूप में प्रदान करता है। दूसरी ओर विद्यार्थी शिक्षक द्वारा प्रदत्त ज्ञान को ग्रहण कर अपने व्यक्तित्व का परिमार्जन करता है। व्यवहार, परिमार्जन की प्रक्रिया को ही मनोविज्ञान में अधिगम, सिखाना और प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। अतः कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण में शिक्षण प्रक्रिया में सीखना तथा सिखाना दोनों प्रक्रियाएं एक साथ चलती हैं। कक्षा में शिक्षण, अधिगम होता है। विद्यार्थी प्रत्यक्षीकरण करता है इसे ही अधिगम कहते हैं। यदि कक्षा का वातावरण छात्र के अनुकूल होता है तभी वह ठीक ढंग से समायोजन कर सकता है। इसी के आधार पर ही अपनी शैक्षिक उपलब्धि होती है।

बालक की शिक्षा में उसके वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। यह कक्षा पर्यावरण में सबसे प्रभावशाली तत्व है। बालक का समूह जिसमे वह अधिक समय व्यतीत करता है। कक्षा समूह और खेल समूह ऐसे दो समूह है, जिसमें उसका अधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए स्पष्ट है कि इन दोनों समूह में बालक के व्यवहार पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

प्राचीन काल में व्यक्ति की शिक्षण (Individual Teaching) पर बल दिया जाता था। परंतु वर्तमान समय में सामूहिक शिक्षण पर बल दिया जाता है। अतः मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से भी प्रमाणित हो चुका है कि बालक अपने कक्षा पर्यावरण में अपने समूह के अन्य बालकों के व्यवहार के अनुकरण द्वारा भी बहुत कुछ सीखता है। वह समूह में रहकर दूसरों के प्रभाव से प्रभावित होता है, दूसरों को प्रभावित करता है, मिलता–जुलता है, प्रशंसा प्राप्त करता है, प्रोत्साहित होता है। तथा इसी प्रकार के अन्य अनुभव प्राप्त करता है। उसमें दूसरों को देखकर प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। शिक्षा ग्रहण करते समय वह कक्षा के अन्य छात्रों के साथ चलता है और आगे बढ़ना चाहता है। इसी प्रकार उसका व्यवहार रूपांतरित होता रहता है और वह इन सब परिस्थितियों में समायोजन भी करना सीखता है।

कक्षा के वातावरण में ही छात्र सहयोग की भावना, नियमों का पालन करना, प्रतिस्पर्धा की भावना, विषयों की जानकारी, अनुशासन में रहना, बड़ों का सम्मान करना, छात्रों का एक दूसरे से परिचित होना, समूह में रहकर कार्य करना आदि सीखते हैं। ऐसी क्रियाओं के द्वारा भी छात्र समायोजन करना सीखते हैं। और समायोजन कर लेने पर इसका प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। छात्रों को बैठने की सुविधा, पुस्तकों की सुविधा, जल की सुविधा, प्रकाश एवं हवा उपयुक्त मात्रा में उपलब्ध हो, यह भी छात्र के प्रत्यक्षीकरण पर प्रभाव डालती है। कक्षा में अध्यापकों का न होना, समय–सारणी का ठीक न होना, अनुशासन की कमी होना, छात्रों में सहयोग की भावना में कमी होना आदि अनेक कारण विद्यालय में हो सकते हैं। विद्यालय जैसी संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए कक्षा पर्यावरण एवं समायोजन की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि छात्र हमारे देश का भविष्य हैं, यदि हम इसमें सुधार नहीं करेंगे तो हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

अर्थात कक्षा पर्यावरण एवं समायोजन की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। जिससे विद्यालय, समाज, परिवार और उसके स्वास्थ्य के मध्य समायोजन स्थापित करके उसके भविष्य को उन्नत बनाया जा सकता है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का शीर्षक 'माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के संबंध में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन है' जिसमें

छात्र–छात्राओं को कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण से तात्पर्य डा0 समपाल सिंह, जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर द्वारा निर्मित कक्षा पर्यावरण मापनी द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है। और समायोजन से तात्पर्य डा0 वी0 के0 मित्तल द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेषिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है। इसके साथ ही प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 9वीं के छात्र एवं छात्राओं की वार्षिक परीक्षा के संपूर्ण प्राप्तांक को लिया गया है।

शोध कार्य के उद्देश्य

कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन स्तर का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य है। अतः अध्ययन के उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया गया है –

सामान्य उद्देश्य

छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना।
2. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण तथा समायोजन के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना।
   i. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं पारिवारिक समायोजन के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना।
   ii. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना।
   iii. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना।
   iv. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं विद्यालय समायोजन के मध्य सम्बंधों का अध्ययन करना।
3. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का तुल्नात्मक अध्ययन करना।

शोध विषय का सीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित जो सीमांकन की गई है वह निम्नलिखित है :–

1. सम्पूर्ण विद्यालयों के स्थान पर केवल दक्षिण दिल्ली के चार विद्यालयों को लिया गया है।
2. सभी कक्षाओं के छात्रों के स्थान पर केवल माध्यमिक विद्यालयों के नौवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं को लिया गया है।
3. न्यादर्श में केवल 200 छात्र एवं छात्राओं को लिया गया है।
4. स्वनिर्मित प्रश्नावली के स्थान पर डॉ0 रामपाल सिंह द्वारा निर्मित कक्षा पर्यावरण मापनी तथा डॉ0 वी0के0 मित्तल द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेषिका का प्रयोग किया गया है।

साहित्यावलोकन

श्रीवास्तव (2007) ने विद्यालयी वातावरण पर प्रशासन पद्धति के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे :–

1. विभिन्न प्रशासन पद्धति से प्रशासित विद्यालयों को विद्यालयी वातावरण की जानकारी प्राप्त करना।
2. अलग–अलग प्रशासन पद्धति से प्रशासित विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने जिला–सीधी, मध्य प्रदेश के शासकीय, सरस्वती तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक निर्देशन विधि से किया न्यादर्श में 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यालयी वातावरण के प्रदत्त संकलन के लिए के0एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित विद्यालयी वातावरण अनुसूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष निम्न थे :–
   i. सरस्वती तथा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण के बीच सार्थक अन्तर पाया गया।
   ii. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
   iii. सरस्वती विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की तुलना में उच्च पाया गया।
   iv. अशासकीय विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण शासकीय विद्यालय से अच्छा पाया गया परन्तु सरस्वती विद्यालयों से अच्छा नहीं पाया गया।

शर्मा (2010) ने सी.बी.एस.ई . तथा यू.पी. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की गणतीय सृजनात्मकता का उनके संस्थागत वातावरण एवं सीखने तथा सोचने की शैली के सन्दर्भ में अध्ययन किया। अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में कुल 600 (तीन सौ सी.बी.एस.ई. एवं तीन सौ यू.पी. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के छात्र) चयनित किया। उपकरण के रूप में प्रो. भूदेव सिंह का गणतीय सृजनात्मकता परीक्षण, संस्थागत वातावरण के लिए एम. एल. शाह तथा अमिता शाह की ACDQ तथा अधिगम एवं सोचने की शैली के लिए डी. वेंकट रमन का SOLAT का प्रयोग प्रदत्तों के संकलन हेतु किया। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष में यह पाया गया कि C.B.S.E. और U.P. बोर्ड के विद्यार्थियों की गणितीय सृजनात्मकता में सार्थक रूप से अन्तर पाया गया। सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों की गणितीय सृजनात्मकता यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पायी गई। इसी प्रकार सी.बी.एस.ई. बोर्ड में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का संस्थागत वातावरण यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाया गया।

कुमार रत्नेश (2012) ने निजी एवं परिषदीय ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस शोध में शोधकर्ता का उद्देश्य निजी एवं परिषदीय ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के कक्षा वातावरण में मूलभूत अन्तर होता है। अर्थात कक्षा वातावरण की सभी चौदह विमाओं–

पुरस्कार, सरलीकरण, आवेष्ठन ....आदि में पर्याप्त सार्थक अन्तर होता है ।

जरीन एस0 (2015) ने परिषदीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित में निष्पत्ति एवं कक्षा वातावरण में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया । इस का प्रमुख उद्देश्य परिषदीय एवं निजी विद्यालयों के छात्रों द्वारा कक्षा में प्रत्यक्षीकृत कक्षा वातावरण की प्रमुख 14 विमाओं तथा गणित की निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात करना। इस शोध कार्य से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुयें–

1. परिषदीय व निजी विद्यालयों के छात्रों द्वारा अपनी कक्षाओं में प्रत्यक्षीकृत अधिगम समर्थक वातावरण की 12 में से 11 विमाओं में अन्तर होता है ।
2. निजी व परिषदीय विद्यालयों के छात्र अपनी कक्षा में पुरस्कार को समान मात्रा में प्रत्यक्षीकृत करते हैं ।

परिकल्पना

प्रस्तुत अनुसंधान में शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया गया है। जो निम्नलिखित हैः–

1. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
2. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
   - i. छात्र एवं छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं पारिवारिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
   - ii. छात्र एवं छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
   - iii. छात्र–छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
   - iv. छात्र–छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं विद्यालय समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।
3. छात्र–छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं लिंग के मध्य कोई अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यायदर्श द्वारा न्यायदर्श चयन दो स्तरों पर किया गया है। प्रथम स्तर पर दक्षिणी दिल्ली के राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालक एवं बालिका विद्यालयों का चयन किया गया, जिसमें सर्वप्रथम दक्षिण पश्चिम दिल्ली में स्थित सभी राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की सूची उपशिक्षानिदेशक, बसंत विहार, दिल्ली के कार्यालय से प्राप्त की गई जिसमें से 4 विद्यालयों को चुना गया। दूसरे स्तर पर 9वीं कक्षा के विभिन्न वर्गों में से एक वर्ग का चयन किया गया। एक विद्यालय में से एक वर्ग में उपस्थित सभी छात्रों का न्यायदर्श के लिए चयन किया गया। इस प्रकार कुल चार विद्यालयों में 220 छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली दी गई, जिसमें से 200 सही एवं पूर्ण रूप से भरी पाई गई।

उपकरण

प्रस्तुत अनुसंधानकार्य में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जाता है–

1. डॉ0 रामपाल सिंह द्वारा निर्मित कक्षा पर्यावरण मापनी।
2. डॉ0 वी0 के0 मित्तल (एम0 ए0 पी0 एच0 डी0) द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेषिका
3. शैक्षिक उपलब्धि 9वीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा के संपूर्ण प्राप्तांक।

कक्षा पर्यावरण मापनी (Learning Environment Inventory)

प्रस्तुत शोध में छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया है। इसके लिए डॉ0 रामपाल सिंह 1982, जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान अजमेर द्वारा निर्मित कक्षा पर्यावरण मापनी का प्रयोग किया गया। जिसमें कक्षा पर्यावरण संबंधित 105 कथन है। प्रत्येक प्रश्नों का उत्तर पत्रक में बॉक्स के अंदर लिखना है। प्रत्येक सही उत्तर के लिए 4 अंक दिए जाएंगे इस परीक्षण के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं।

1. इस परीक्षण में पूछे गए प्रश्न कक्षा के पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण पर आधारित है। इससे 15 आयामों को लिया गया है। इसमें प्रत्येक से संबंधित कथन हैं।
2. यह परीक्षण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का पता लगाने के लिए है।
3. इस प्रश्न कथनों को अंकित करने के लिए 40 से 50 मिनट का समय दिया गया है।

परीक्षण की विश्वसनीयता

विश्वसनीयता– इस परीक्षण की विश्वसनीयता निकालने के लिए 150 कक्षाओं पर परीक्षण पुनः परीक्षण विधि से छात्र–छात्राओं की विश्वसनीयता ज्ञात की गई। इस मापनी के प्रत्येक आयाम के लिए विश्वसनीयता गुणांक प्राप्त हुए जो इस प्रकार हैं–

क्र. सं.	आयाम	विश्वसनीयता
1.	सन्निद्धता	.50
2.	विविधता	.4
3.	औपचारिकता	.43
4.	गति	.55
5.	वातावरण	.58
6.	मतभेद	.67
7.	उद्देश्य–दिशा	.63
8.	पक्षपात	.61
9.	उप–समूहता	.66
10.	सन्तुष्टि	.69
11.	अव्यवस्था	.71
12.	काठिन्य	.51
13.	उदासीनता	.58
14.	प्रजातान्त्रिकता	.70

समायोजन अन्वेशिका परीक्षण प्रश्नावली

छात्रों के समायोजन स्तर का मापन करने के लिए डॉ0 वी0 के0 मित्तल (एम0ए0पी0एच0डी0) द्वारा निर्मित समायोजन अन्वेशिका का प्रयोग किया गया। जिसमें कुल 80 कथन है प्रत्येक कथन का उत्तर, उत्तर

पत्रक में लिखना है। प्रत्येक सही उत्तर के लिए 3 अंक दिये जायेगें। इस परीक्षण के मुख्य तत्त्व इस प्रकार है।

1. इस परीक्षण में पूछे गए प्रश्न पारिवारिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन और विद्यालय समायोजन पर आधारित है। जिसमें प्रत्येक से सम्बन्धित 20 प्रश्न है।
2. यह परीक्षण माध्यमिक विद्यालयों के बालकों के समायोजन का पता लगाने के लिए है।
3. इस परीक्षण के उत्तर देने के लिए 30 मिनट का समय दिया जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि

इसके मापन के लिए 9वीं कक्षा के वार्षिक परीक्षा के सम्पूर्ण प्राप्तांकों को लिया गया है।

आँकड़े एकत्र करने की योजना

आँकड़ों का चयन अनुसंधानकर्ता ने विद्यालय की सामान्य परिस्थितियों में छात्र और छात्राओं से कक्षा सम्पर्क द्वारा किया है जिसमें उनको कक्षा में ही उपयुक्त निर्देश देने के पश्चात् मापनी वितरित कर दी गई तथा सभी कथनों के उत्तर देने के बाद उनसे पुनः वापिस ले ली गई। इस कार्य के लिए सम्बद्ध विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों से निवेदन कर अध्यापकों की और छात्रों की सहायता से प्रश्नावली पूर्ण कराने का कार्य किया गया है।

आँकड़े विश्लेषण की योजना

सभी विद्यालयों से आँकड़ों की गणना करने के उपरान्त उन आँकड़ों की गणना की तथा आवश्यकतानुसार तालिकाएँ बना ली गई। परिकल्पनाओं की जाँच करने लिए मुख्य चर–कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अन्य चर–शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के अन्तर्गत, पारिवारिक समायोजन, सामाजिक, समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन और विद्यालय समायोजन के मध्य सहसम्बंध गुणांक व क्रान्तिक निष्पत्ति (CR) की गणना करके प्राप्त परिणामों की व्याख्या की गई।

प्रस्तुत शोध प्रबंधन में जिन सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है, वे निम्नलिखित हैः–

सहसम्बन्ध (CORRELATION)

$$r = \frac{\sum X^1 Y^1}{N} - CY \; x \; CX$$
$$\overline{\qquad\qquad}$$
$$QY \; x \; QX$$

मध्यमान (MEAN)

$$\sum \frac{FX}{N}$$

मानक विचलन (STANDARD DEVIATION)

$$\text{S. D.} \sqrt{\sum \frac{Fd^2}{N} - \left(\sum \frac{Fd}{N}\right)^2 \;\; x\, I}$$

विचलन की प्रामाणिक त्रुटि (S.E.O.)

$$\text{S. D.} \sqrt{\frac{Q1^2}{N1} + \frac{Q2^2}{N2}}$$

$$= \sqrt{\frac{01^2}{N} + \frac{02^2}{N2}}$$

क्रांतिक निष्पत्ति (C.R.)

$$C.R. = \frac{M1 - M2}{S.E.D.}$$

शोध परिणाम एवं व्याख्या

छात्र–छात्राओं की कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण से शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का सहसम्बन्ध जानने के लिए सहसंबंध गुणांक निकाला गया। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के साथ शैक्षिक–उपलब्धि एवं समायोजन का धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध है। इसके अतिरिक्त छात्र तथा छात्राओं का कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, तथा जो परिणाम प्राप्त हुए वह निम्नलिखित हैः–

1. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक–उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जिसका सहसम्बन्ध गुणांक (r=0.39) है। जो .01 स्तर पर सार्थक है।
2. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जिसका सहसम्बन्ध गुणांक (r=0.76) है। जो .01 स्तर पर सार्थक है।

2.1 छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं पारिवारिक समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जिसका सहसम्बन्ध गुणांक (r=0.38) है, जो .01 स्तर पर सार्थक है।

2.2 छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जिसका सहसम्बन्ध गुणांक (r=0.35) है, जो .01 स्तर पर सार्थक है।

2.3 छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं स्वास्थ्य समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जिसका सहसम्बन्ध गुणांक (r=0.37) है, जो .01 स्तर पर सार्थक है।

2.4 छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं विद्यालय समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जिसका सहसम्बन्ध गुणांक (r=0.34) है, जो .01 स्तर पर सार्थक है।

3. कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण करने वाले छात्र–छात्राओं का मध्यमान 289.12 तथा 281.7 और क्रान्तिक निष्पत्ति 1.84 है, जो सार्थक नहीं है।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर जो निष्कर्ष है वह निम्नलिखित हैः–

1. छात्र एवं छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
2. छात्र एवं छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन में धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध होता है।
3. छात्र एवं छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं लिंग के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

i. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं पारिवारिक समायोजन में सार्थक सहसंबंध पाया जाता है।
ii. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया जाता है।
iii. छात्रों के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं स्वास्थ्य समायोजन में धनात्मक सार्थक सहसंबंध है।
iv. छात्र एवं छात्राओं के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं विद्यालय समायोजन के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध है।

शैक्षिक उपयोगिता

वर्तमान समय में शिक्षा का मुख्य कार्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। बालक के विकास में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण सहायक होता है। इसके साथ–साथ समायोजन जिसके अंतर्गत पारिवारिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन और विद्यालय समायोजन बालक के विकास में सहायक होता है। आज के इस आधुनिक युग में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण की बहुत अधिक आवश्यकता महसूस हो रही है। वहीं पर छात्रों को कक्षा पर्यावरण एवं समायोजन के प्रति जागरूकता में कमी होने पर शिक्षकों, माता–पिता एवं समाज के लिए विचारणीय समस्या बनी हुई है। इस स्थिति में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध में समायोजन के अंतर्गत पारिवारिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, विद्यालय समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि स्तर के संदर्भ में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन से सिद्ध होता है कि शैक्षिक उपलब्धि में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण और समायोजन सहायक होता है। अतः छात्रों को सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे उन्हें शैक्षिक उपलब्धि में सफलता प्राप्त हो सके।

यह समस्या बहुत गंभीर है। अतः इसका धैर्य पूर्वक, सहानुभूति पूर्ण, दृष्टिकोण से समाधान करना चाहिए। परंतु चिंता का विषय यह है कि बालक के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों, समूहों के पास सुनने का समय नहीं होता है। छात्रों की कक्षा के प्रति बढ़ती हुई नीरसता व अरुचि को दूर करना आवश्यक है। इसके लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं :–

1. कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का धनात्मक सहसंबंध पाया गया है। अतः कक्षा पर्यावरण में उच्च शैक्षिक उपलब्धि एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि स्तर के छात्रों की अलग शिक्षा व्यवस्था करें। कक्षा में निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों को ध्यानपूर्वक पढ़ाया जाए कक्षा में प्रत्यक्षीकरण के लिए बार–बार अभ्यास कराया जाए। शिक्षक का दायित्व है कि वह कक्षा में आत्मीय खुला और तनावमुक्त वातावरण का निर्माण करें, ताकि छात्र निडर और आश्वस्त होकर अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें।
2. कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन में सार्थक सहसंबंध है। अर्थात जिन छात्रों में समायोजन करने की अधिक क्षमता होती है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है। जिन छात्रों के समायोजन में कमी है, उनको समायोजन करने के लिए प्रेरित करना होगा तथा अध्यापक द्वारा कक्षा के पर्यावरण को रुचिकर बनाकर प्रस्तुत करना चाहिए। जिससे प्रत्यक्षीकरण अधिक मात्रा में हो सके।
3. शिक्षकों की छात्र–छात्राओं में भेद नहीं करना चाहिए। छात्रों के कक्षा पर्यावरण पर अधिकतर ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे छात्र कक्षा में रुचि लेकर अध्ययन कार्य कर सके इनको अभ्यास कार्य भी दिया जाना चाहिए।
4. कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण के अंतर्गत शिक्षकों को अधिक आयु वाले छात्रों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। क्योंकि वह गत वर्ष के अनुत्तीर्ण छात्र होते हैं। अतः कक्षा में उन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
5. माता–पिता अपने बालकों को विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन के लिए प्रेरित करें तथा उनकी सहायता करें।

निष्कर्ष

कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण उन समस्त आन्तरिक दशाओं एवं प्रभावों का योग है जो प्राणी के जीवन एवं विकास पर प्रभाव डालते हैं। छात्र जीवन में हर पल निर्देशन की आवश्यकता होती है। जिसमें अभिभावक एवं शिक्षक की भूमिका अहम होती है। ऐसी अवस्था में वह छात्र के कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का ध्यान रखते हुए कक्षा में प्रत्यक्षीकरण की अपेक्षाएं करते हैं। कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन के अभाव में प्रत्यक्षीकरण का स्तर गिरता जा रहा है जिससे शैक्षिक उपलब्धियाँ भी प्रभावित हो रही है। वर्तमान समय में यह विद्यालय एवं छात्रों के लिए जटिल समस्या बनती जा रही है। इसलिए छात्रों के कक्षापर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। छात्रों के भावी जीवन उत्कृष्ट बनाने तथा आज के इस वैज्ञानिक युग के अनुरूप ढालने के लिए अध्यापकों, अभिभावकों और प्रशासन द्वारा सही मार्गनिर्देशन करना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *अस्थाना डॉ0 विपिन एवं अग्रवाल राम नारायण, मनोविज्ञान और शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन रांगेय राघव मार्ग, आगरा–2*
2. *तिवारी, गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा संस्करण, 1979*
3. *पाठक पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, तेती सवं संस्करण, 1974*
4. *पाण्डेय डॉ. कामता प्रसाद, शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988*

5. पाल डॉ. हंसराज, प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान हिन्दी कार्यक्रम कार्यान्वियनं निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2006
6. पाण्डेय के. पी., मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी अमिताश प्रकाशन, 1999
7. भाटिया हंसराज, शिक्षा मनोविज्ञान मण्डल पुस्तक भण्डर, काशी संस्करण, 1976
8. माथूर एस.एस., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा संस्करण, 1997
9. सारस्वत डॉ. मालती, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद दशम संस्करण 2000
10. सरीन एवं सरीन, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां नवीन संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1999
11. सुखिया एस0 पी0, शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1970
12. शर्मा आर. ए., शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन नवीन संस्करण, 1998 लिस्ट 79, 94
13. शर्मा डॉ0 आर0 ए0, फण्डामेण्टल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, लाल बुक डिपो, मेरठ संस्करण 1993
14. दवे श्रीमती इन्दु, शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर–4 संस्करण 1971
15. मंगल एस0 के0, शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना संस्करण 1984